## विचार बिन्दु

**अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत। –कहावत**

# एक सच्चा भारतीय क्या बोले, क्या न बोले --

एक गांव का सा लगने वाले आदमी ने एक शूटेड बूटेड शहरी बाबूजी से पूछ लिया कि यह बताओ जी, सच्चे भारतीय होने, देश प्रेमी होने, देशद्रोही होने आदि का सर्टिफिकेट कौन देता है?

ऐसा लगता है अब लेना पड़ेगा, ऐसी प्रमाण पत्र। पहले तो यह काम सभी धर्मों के कुछ धर्मगुरु, कथावाचक, कुछ धार्मिक–अधार्मिक संगठन और विभिन्न महापुरुषों, देवी–देवताओं के नामों से गठित कुछ नई, पुरानी सेनाएं आदि करते, दिखते थे। अब क्या कोर्ट जाना पड़ेगा, इस छोटे से काम के लिए?

शहरी बाबू ने पूछ लिया तेरे को क्या संसद पर प्रदर्शन करना है या कोई सरकारी नीति की आलोचना करनी है या कोई सरकारी या सेना या चीन से लगती सीमा संबंधी कोई गोपनीय जानकारी लेनी या देनी है जो सच्चे भारतीय होने के सर्टिफिकेट की जरूरत पड़े। अपन सभी सच्चे भारतीय है जब तक सरकार की नीतियों की आलोचना नहीं करें। इस प्रमाण पत्र की ज्यादा जरूरत तो सांसदों आदि के लिए होती है, तुम कौन से विधायक, सांसद हो जो चिंता में दुबले हो रहे हो।

गांव वाले भले आदमी ने कहा -- साहब मैं कठपुतली का खेल दिखाता हूं, डरता हूं, कभी किसी को कुछ ऐसा लग जाए कि उसका या उसकी दुकान का मजाक उड़ाया जा रहा है और किसी स्थानीय बादशाहों से ठुकाई न करवा दे!!!

तो तू ऐसा क्या दिखाता है तेरे खेल में जो यों घबरा रहा है? दिखने में तो नंगा, भूखा लगता है और पुरानी कहावत है, नंगे भूखे सदा सुखी-- तेरा कोई क्या बिगाड़ लेगा, मोज कर, क्यों बिना बात के दर्द में दुबला हुए जा रहा है।

फिर भी वह संतुष्ट नहीं हुआ। साहब मैं कई बार खेल में राजा, मंत्री, दरबार, सेनापति, सलाहकार का खेल दिखा देता हैं। उसमें कई बार राजा को गूंगा दिखा देता हूं, मंत्रियों को भ्रष्ट, चापलूस दिखाता हूं, सेनापति को खूंखार दिखा देता हूं, सलाहकार को कानाफूसी करते दिखाता हूं--- कोई इसे अपने ऊपर मानकर नाराज तो नहीं हो जाएगा??

तूं यह बता– तूं कोई सांसद है, मंत्री है, अखबार का मालिक है, टीवी चैनल चलाता है, कोई बड़ा कारोबारी, सेठ है जो राजा अपनी मर्जी, मोज मस्ती से हट कर, तेरे पर वक्त खराब करेगा।

कठपुतली वाले के साथ चर्चा चल ही रही थी कि कुछ ओर लोग उसमें शामिल हो गए। एक वकील साहब ने कहा::--

भाषण, विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक मौलिक अधिकार है। यह अधिकार व्यक्तियों को बिना किसी सरकारी वो अन्य बाहरी हस्तक्षेप, भय के अपनी राय व्यक्त करने की अनुमति देता है। शब्दों से, लेखन से, कला– संगीत – और अन्य माध्यमों से अपने विचार व्यक्त किए जा सकते है, विचारों का आदान–प्रदान किया जा सकता है। यह सत्य की थे तक जाने का रास्ता है। इसके अभाव में सरकारों को जनता की समस्याओं, आकांक्षाओं, सरकारी कामकाज की सत्यताओं का किसे पता चलेगा ?

संविधान में मिली गारंटी के, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में भारत के सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक निर्णय भी दिए है जिनमें स्पष्ट किया है कि संविधान में उल्लेखित विशेष सावधानियों, परिस्थितियों के अतिरिक्त इस मूल अधिकार के उपयोग को किसी भी प्रकार संकुचित, बाधित नहीं किया जा सकता। 1950 में रमेश थापर बनाम मद्रास राज्य के मामले में, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संविधान के अनुच्छेद 19(1) (a) के तहत एक मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी। श्रेय सिंहल मामले में, न्यायालय ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 66 को रद्द किया है जो ऑनलाइन अभिव्यक्ति पर अत्यधिक प्रतिबंध लगाता था। न्यायालय के अनुसार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक स्वस्थ, सभ्य समाज का अभिन्न अंग है और अनुच्छेद 21 (जीवन के अधिकार) के तहत सम्मानजनक जीवन के लिए आवश्यक है।

एक सांसारिक समझ रखने वाले भाई ने कहा, साहब, यह कोर्टों के फैसले धरे रह जाते है। जिसके गोलालाठी लगा कर अंदर करना है उसे कर देते। आप जैसे वकील वर्षों लड़ते रहते है, उस आदमी के लगाई गोलालाठी कोई आसानी से नहीं खोल सकता। क्या काम आए यह बड़े बड़े फैसले?? नेता की जेब में बैठा थानेदार इन सबसे ऊपर है। इन फैसलों की पालना भी कोई पैसे वाला ही अपने हक में जल्दी करवा सकता, साधारण बंदों के बस की बात नहीं।

हर आदमी कोई राहुल गांधी थोड़ा ही न है जो उस पर छोटी निचली अदालतों में लगाए 20,30 केस एक साथ लड़ सकता है या फिर तुर्तافुर्त में की गई सांसदी खत्म करने के बाद फिर चुनाव लड़ ले और जीत के फिर सांसद बन जाए???

> **एक सांसारिक समझ रखने वाले भाई ने कहा, साहब, यह कोर्टों के फैसले धरे रह जाते है। हर आदमी कोई राहुल गांधी थोड़ा ही न है जो उस पर छोटी निचली अदालतों में लगाए 20, 30 केस एक साथ लड़ सकता है या फिर तुर्ताफुर्त में की गई सांसदी खत्म करने के बाद फिर चुनाव लड़ ले और जीत के फिर सांसद बन जाए???**

इस बहस में कठपुतली वाले की बात कहीं गुम हो गई और बात, फिर घूम–फिर पहुंच गई एक 5वीं बार के सांसद तक। उन सांसद जी के बारे में सुप्रीम कोर्ट ने कोई टिप्पणी कर दी जिसका लब्बो लबाब शायद यह है कि सच्चे भारतीय को सेना के संबंध में संसद में बोलना चाहिए, पब्लिक में, सोशल मीडिया पर नहीं।

इस टिप्पणी के बाद उन सांसद जी को कुछ नेता तरह–तरह के प्रमाण पत्र देने लगे, धुनाई करने लगे जैसे ---- उनकी बे सिर–पैर की बात करने की आदत है, कुछ भी बोलते रहते है, आए दिन संवैधानिक संथाओं का अपमान करते है, जनतंत्र को कमजोर करने में लगे है, अराजकता फैलाते है, आतंकवादी लगते है, दुश्मन देश की भाषा बोलते है, तीन–तीन बार श्रीं कोर्ट की फटकार के बाद भी नहीं सुधरे, नेता प्रतिपक्ष बनने के लाइक ही नहीं, राजनीतिक समझ शून्य है वगैरा–वगैरा। किंतु कुछ बड़बोले बड़े नेताओं ने तो हद ही कर दी। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी की यहां तक व्याख्या कर डाली कि वह सांसद सुप्रीम कोर्ट से सर्टिफाइड देशद्रोही है। किसी दूसरे न्यायालय की, किन्हीं दूसरे मामलों में हुई, किन्हीं दूसरी कार्यवाहियों का हवाला देकर बताने होड़ लगा रहे है कि सर्टिफाइड जमानती – भ्रष्ट हैं।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी के बाद बाढ़ सी आ गई इस प्रकार की उलूल–जलूल बातें कहने वालों की। देश के एक बहुत बड़े नेता ने तो इस पर प्रतिक्रिया देते हुए, इसे उन पर सबसे बड़ी फटकार बताया है। ऐसा करने से उसे विदेशी मीडिया में प्रमुखता मिल जाती है।

खैर यह सब तो बहुत बड़ी बातें हो गई किंतु आम आदमी भी यह तो जानना ही चाहेगा कि चीन में कब –कब कितनी भारतीय भूमि पर कब्जा किया या यह सब कोरी बकवास फैलाई जा रही है? किसी सांसद को यह सब पूछने का अधिकार है या नहीं, यह तो न्यायालय जाने किंतु सरकार को तो तो स्वमेव ही यह अधिकार है कि वह सब जनता को बता दे!!! क्यों नहीं बताते, बता दो। यह जो बहुत सारी सेटेलाइट इमेजेज घूम रही है, पब्लिक डोमेन में, इनका खंडन ही कर दो। यह जो वहां के कई चरवाहे, कुछ स्थानीय जनता द्वारा, कुछ बड़े जनप्रतिनिधियों द्वारा भी कुछ कुछ ऐसा सा ही कहा जा रहा है तो राष्ट्र हित में इन सब का खंडन कर दो ---न रहेगा बना न बजेगी बांसुरी --इसके बाद यह सांसद जी या ओर कोई भी क्या कर लेंगे!!!! कुछ पूर्व फौजी भाई भी यह चर्चा करते पाए जाते है कि पहले लद्दाख क्षेत्र में 65 ऐसे प्वाइंट थे जहां तक भारत की व चीन की सेनाओं द्वारा गस्त करके आती थी किंतु अब बहुत से ऐसे प्वाइंटस पर जाने से हमारी सेना को रोक दिया --- यह तो उस दुष्ट शत्रु ने ही किया होगा?? इस सब पर एक बड़े बड़बोले से भी कहा– सब बातें सब को नहीं बताई जाती!!!

अभी तक श्रोता रहे एक आदमी ने पूछ लिया क्यों जी, कोर्टों के पास तो करने को ओर भी ढेरों काम है -- 10,20,30,40 साल पुराने मुकदमे चल रहे है, उन्हें निपटा दें, हजारों हजार निरपराध लोगों को जेलों में बंद कर रखा है उनकी सुनवाई ही कर लें आदि–आदि। दूसरे ने उत्तर दिया, ऐसे लोगों के पास मंहगे वकील, नेता नहीं। उनकी बात कौन रखे माननीय न्यायालयों के सामने। वकीलों की 5,10,20 लाख रुपए की फीस यह टटपूँजिए मुवक्किल लोग थोड़े दे सकते हैं? तो इनकी बात ऊपर वाली अदालतों में कौन सुनाए। ओर न्याय के लिए तो कहावत मशहूर है -- न्याय की देवी की आंखों, कानों पर पट्टी है, जो सुनाओगे वो सुनेगी, दिखाओगे वह देखेगी। यह काम हर कोई तो कर नहीं सकता, कोई कोई उच्च श्रेणी वाले वक्ता, अधिवक्ता, नेता ही कर सकते है और उन्हें इस प्रकार की पहलवानी करने के लिए निरंतर खुराक चाहिए!!!

चर्चा का समापन यों हुआ कि सब मामले एक से नहीं हो सकते। नेताओं के, संविधान से संबंधित या जो बड़े कारोबारी है, मंहगा से मंहगा वकील ले जा सकते है उनकी बात तो पहले सुननी ही पड़ेगी, क्या आपत्ति है? ओर राहुल गांधी बहुत सी बातें अच्छी ही कहते होंगे, लोग भी कहते है, आदमी तो भला है किंतु हमारे सैनिक पिट रहे है यह कहना तो ठीक नहीं। कोई बात अच्छे इरादे से कहते हुए भी कई बार उनका शब्द चयन ठीक नहीं होता।

आशा है कोई अवमानना का सामना नहीं करना पड़ेगा।

**–अतिथि सम्पादक,**
**महावीर सिंह,**
**आई.ए.एस. ( से.नि. )**

---

# विद्यालय समय पर चिन्तन

**प्रो.कैलाश सोडाणी**

समाज में विद्यालय समय को लेकर बहुत गम्भीरता एवं चिन्तन की आवश्यकता है। धरातल पर विद्यालय समय को लेकर न तो गम्भीरता है और न ही किसी प्रकार की सोच। जब कि हमारे जीवन की खुशहाली में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिकता वं अंग्रेजीकरण के प्रभाव में बालक के सर्वांगीण विकास हेतु ऋषि–मुनियों द्वारा रचित गुरुकुल व्यवस्था को हम भूलते जा रहे हैं। गुरुकुल में अध्ययन एवं खेलकूद के साथ–साथ भोजन तथा कुल की अन्य व्यवस्थाओं को पूर्ण करने की जिम्मेदारी भी बालकों की ही होती थी, जो उसके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। नि:सन्देह समय के साथ व्यवस्थाओं में थोडा–बहुत परिवर्तन होता है और होना भी चाहिये, परन्तु मूल भावना को तो हर परिस्थिति में जीवन्त रखना ही होगा।

अनेक अध्ययनों से यह प्रामाणिक है कि शारीरिक गतिविधियाँ शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में योगदान देती हैं। बालकों के सन्दर्भ में शारीरिक गतिविधियों का अर्थ खेलकूद से है। जो हमारे देश के विद्यालयों और महाविद्यालयों के टाइम टेबल से गायब होते जा रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 80 प्रतिशत किशोर शारीरिक गतिविधि के अनुशंसित स्तरों को पूरा नहीं करते हैं। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन का कहना है कि बच्चो को स्कूल समय में कम से कम 3द्ध मिनट प्रतिदिन जोरदार शारीरिक गतिविधियाँ करनी चाहिए जैसे –दौडना, तैरना, फूटबाल या कबड्डी खेलना आदि। आज खेलकूद को लेकर शैक्षणिक संस्थाओं में भारी उदासीनता है। एक तरफ क्लास रूम में एसी॰ लगना प्रारम्भ हो गये है और दूसरी ओर बॉलीबाल–बास्केटबाल जैसे छोटे खेल के मैदान भी गायब होते जा रहे हैं।

सबसे बडी रूकावट आ रही है ड्क्त विद्यालय समय से। विशेष रूप से शहरों में निजी विद्यालय प्रात: 8 बजे से 2 बजे तक संचालित हो रहे हैं। हमारे देश के तापमान के अनुसार 2 बजे खेल–कूद का समय नहीं होता है, जिससे बच्चे सीधे घर पर ही जाते हैं। दूरी के कारण बच्चों का स्कूल आना–जाना बसों से ही होने लग गया है। खेलने का समय होता है सांय 5 बजे से 7 बजे। सांय 5 बजे पुन: विद्यालय आने जाने के लिए न तो कोई व्यवस्था है और न कोई सोच। प्रात: 8 से 2 बजे के समय ने तो विद्यार्थियों को खेल की दुनियाँ से ही ओझल कर दिया है। दूसरी ओर बढ ते ट्रेफिक ने बालकों का मोहल्ले में खेलना भी बन्द कर दिया है।

खेलकूद का सम्बन्ध गोल्ड मेडल या सिल्वर मेडल प्राप्त करने से नहीं है, अपितु शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ नागरिक तैयार करना है। शारीरिक गतिविधियों से व्यक्ति की वर्किंग लाइफ अच्छी और लंबी रहती है एवं हॉस्पिटल से दूरी बनी रहती है।

मेरा सौभाग्य है कि मैं गाँव की एक सरकारी स्कूल का विद्यार्थी रहा। जहाँ खेल के मैदान भी थे और शारीरिक शिक्षक भी। इनमे सबसे बडी बात थी, विद्यालय समय प्रात: 10 से 5 बजे। समय की अनुकूलता एवं उपयुक्तता से मुझे मेरे बचपन में सांय 5 बजे से खेलकूद का भरपूर अवसर मिला। वहीं दूसरी ओर मेरी बेटियों का स्कूल समय प्रात: 8 से 2 बजे रहा, परिणामस्वरूप उन्हें खेलना–कूदना कुछ आया ही नहीं। जीवन–पर्यन्त उन्हें यह कमी झेलनी पडेगी। मेरी कॉलेज लाइफ के समय भी सांय खेल के मैदान खिलाडियों से भरे रहते थे, कैम्पस में रौनक रहती थी। आज कॉलेजों में जहाँ खेल के मैदान एवं सुविधाएँ उपलब्ध है, खाली पडा हैं, सन्नाटा छा रहा है। आज कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों का वह समूह है जिसे अपनी स्कूल लाइफ में खेलने का अवसर ही नहीं मिला। परिणामस्वरूप ऐसे विद्यार्थियों में खेलों के प्रति न तो रूचि रही है और न ही कोई सोच है। वर्तमान में हमारे युवा व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर जैसे विदेशी मठाधीशों के षड्यंत्र में फंसते जा रहे हैं। अप्रत्यक्ष रूप से खेलों की प्रासंगिकता को कमजोर करने से सायंकाल जिस नौजवान के हाथों में हॉकी या पैरों में फूटबाल होना चाहिए, वह सज्जन मोबाइल की दुनिया में खोया हुआ है और निठुला बनने की ओर अग्रसर है साथ ही दूसरी ओर उसके मन मस्तिष्क से भारतीय संस्कृति को विलुप्त करने की इन मठाधीशों की योजना सफल होती जा रही है।

मेरा तो शिक्षकों, अभिभावकों और सरकार से यही आग्रह है कि विद्यालय समय को अनिवार्यत: प्रात: 10 बजे से किया जावे। प्रशासनिक दृष्टि से यह परिवर्तन करने योग्य भी है और बहुत मामूली है, परन्तु परिणाम नि:सन्देह क्रांतिकारी आएंगे। समय रहते जागरूक हो जाना चाहिए।

**–प्रो.कैलाश सोडाणी,**
**पूर्व कुलगुरू, वर्धमान महावीर**
**खुला विवि, कोटा**

---

# हमारे प्रथम स्वतंत्रता दिवस की शाम और 15 अगस्त की सुबह की भूली-बिसरी यादे

## पिछले 78 वर्षों में हमारी प्रगति की तरफ बढ़ते कदम

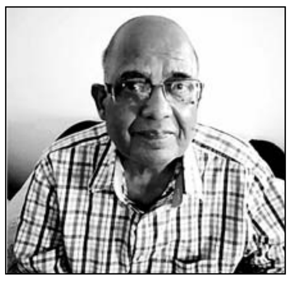

**डॉ. जे.के. गर्ग**

हमारे देश के स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। उनके साथ समूचा देश था उनके अगिनत अनुयायियों में सरदार पटेल नेहरू राजेंद्र प्रसाद मोलाना आजाद आदि प्रमुख थे। बापू ने आजाद भारत की बागडोर नेहरू जी को सौंपने का तय किया और सरदार पटेल आदि को उनका नेतृत्व मानने को कहा जब तय हो गया कि भारत 15 अगस्त 1947 को आज़ाद होगा तो जवाहर लाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने महात्मा गांधी को पत्र भेजा। इस ख़त में लिखा था, बापू 15 अगस्त हमारा पहला स्वाधीनता दिवस होगा। आप राष्ट्रिपता हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप इसमें शामिल हो कर हम सबको अपना आशीर्वाद दें एवं हमारा मार्गदर्शन करें। गांधीजी ने इस पत्र का जवाब भिजवाया, जब कलकत्ता में हिन्दू–मुस्लिम एक–दूसरे की जान ले रहे हैं, ऐसे में मैं जश्न मनाने के लिए कैसे सोच सकता हूँ और कैसे आ सकता हूं? मैं दंगा रोकने के लिए अपनी जान दे दूंगा हम सब को यह जान कर हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि जब देश को 15 अगस्त, 1947 को आजादी मिली तो बापूजी खुद आजादी के जश्न में शामिल नहीं हुए थे क्योंकि बापूजी आज़ादी के दिन दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बंगाल में गये हुये थे, जहां वे हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए आमरण अनशन कर रहे थे। जवाहरलाल नेहरू ने ऐतिहासिक भाषण 'ट्रिस्ट विद डेस्टनी'14 अगस्त की मध्यरात्रि को वायसराय लॉज (मौजूदा राष्ट्रपति भवन) से दिया था। तब नेहरू प्रधानमंत्री नहीं बने थे। इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना। यह एतिहासिक भाषण हमारे मस्तिष्क पर तत्कालीन भारत की दशा और स्वतंत्रता सेनानियों के स्वप्नों का मानचित्र प्रस्तुत करता है इस भाषण को पूरी दुनिया ने सुना, लेकिन गांधी उस दिन नौ बजे ही सोने चले गए थे।

**15 अगस्त 1947 को जवाहर लाल नेहरू का भाषण**

जवाहर लाल नेहरू ने अपने भाषण में कहा कि कई साल पहले हमने भाग्य को बदलने का प्रयास किया था। आज वो समय आ गया है जब हम अपनी से गुलामी से मुक्त हो जाएंगे। पूरी तरह नहीं लेकिन यह महत्वपूर्ण है। जब आधी रात 12 बजे पूरी दुनिया सो रही होगी। इस दौरान भारत स्वतंत्र जीवन के साथ नई शुरुआत करेगा। नेहरू के इस भाषण ने हर भारतीय के अंदर नए भारत के सपने की ललक जगाने का काम किया। नेहरू ने अपने भाषण में कहा– ये ऐसा समय है जो इतिहास में बेहद कम देखने को मिलता है। पुराने से नए की ओर जाना. एक युग का अंत होना। अब सालों से शोषित देश की आत्मा अपनी बात कह सकती है। उन्होंने कहा कि यह संयोग है कि हम पूरे समर्पण के साथ भारत और उसकी जनता की सेवा के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं। इतिहास की शुरुआत के साथ ही भारत ने अपनी खोज शुरू की और न जाने कितनी सदियां इसकी भव्य सफलताओं और असफलताओं से भरी हुई हैं। दूसरे युग की भारत खुद को खोज रहा है....

नेहरू ने कहा कि समय अच्छा हो या बुरा, भारत ने कभी अपने आदर्शों को नहीं भुलाया, जिसने हमेशा हमें आगे बढ़ने की शक्ति दी। आज एक युग का अंत हो रहा है। लेकिन दूसरे युग की तरफ भारत खुद को खोज रहा है। जिस उपलब्धि की हम खुशियां मना रहे हैं। वो नए अवसरों के खुलने के लिए केवल एक कदम है। इससे भी बड़ी जीत और उपलब्धियां हमारा इंतजार कर रही हैं। क्योंकि हममें इतनी समझदारी और शक्ति है जो हम इस अवसर को समझें और भविष्य में आने वाली चुनौतियों को स्वीकार करें।

किसी भी आंख में न रहे आंसू....

जवाहर लाल नेहरू ने भारतीयों को संबोधित करते हुए आगे कहा कि भविष्य में चैन से नहीं बैठना है। हम जो बात कह रहे हैं या कर रहे हैं उसे पूरा किए बगैर आराम नहीं करना है। भारत की सेवा का मतलब है करोड़ों पीड़ितों की सेवा करना यानी गरीबी को मिटाना, बीमारियों और अवसर की असमानता को खत्म करना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही इच्छा है कि किसी भी आंख में आंसू न रहें। नेहरू ने आगे कहा कि लोगों की आंखों में जब तक आंसू हैं वो पीड़ित हैं। तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। इसके लिए हमें मेहनत करने की जरूरत है। ये सपने भारत के लिए हैं साथ पूरे विश्व के लिए भी हैं। कोई भी देश अब खुद को अलग नहीं सोच सकता है क्योंकि सभी राष्ट्र और सभी लोग एक दूसरे से बड़ी निकटता से जुड़े हुए हैं। शांति को विभाजित नहीं किया जा सकता है। ऐसे ही स्वतंत्रता को भी विभाजित नहीं किया जा सकता है। हमें ऐसे भारत का निर्माण करना है जहां उसके सारे बच्चे रह सकें।

**एक नए तारा का उदय हुआ, काश यह उम्मीद धूमिल न हो...**

नेहरू ने अपने संबोधन में कहा कि अब सही समय आ चुका है जब सालों के संघर्ष के बाद अब भारत जागृत है और खड़ा है। हमारे लिए नया इतिहास शुरू हो चुका है। एक ऐसा इतिहास जिसका निर्माण हम करेंगे। जिसे हम बनाएंगे और जिसके बारे में अन्य लोग देखेंगे। एक नए तारे का जन्म हुआ है और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। एक नई उम्मीद का जन्म हुआ है। काश ये तारा कभी अस्त न हो और ये उम्मीद कभी धूमिल न हो। हम हमेशा इस आजादी में खुश रहें, आने वाला भविष्य हमें बुला रहा है। 15 अगस्त, 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने अपने दफ़्तर में काम किया। दोपहर में नेहरू ने उन्होंने अपने मंत्रिमंडल की सूची सौंपी जिनमें सरदार पटेल आर ऐ चेट्टी बाबा साहिब अम्बेडकर बलदेवसिंह गोपालस्वामी आयेंगर मोलाना आज़ाद राजेंद्र प्रसाद श्यामा प्रसाद मुख़र्जी जजीवंराम एच सी भाभा रफी अहमद किदवई डा अमृत कौर वी गाडगीळ केसी नियोगी शामिल थे। इसके बाद नेहरु मे इंडिया गेट के पास प्रिंसेस गार्डन में एक सभा को संबोधित किया। 15 अगस्त, 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने अपने दफ़्तर में काम किया। दोपहर में नेहरू ने उन्होंने अपने मंत्रिमंडल की सूची सौंपी इसमे नेहरु ने इंडिया गेट के पास प्रिंसेस गार्डन में एक सभा को संबोधित किया।

**हमारे प्रथम स्वतंत्रता दिवस की शाम और 15अगस्त की शुभ भूली-बिसरी यादें स्वतंत्र भारत के पिछले 76 वर्षो में की गोरवमयी प्रगति की तरफ बढ़ते हुए कदम**

जैसे–जैसे राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के 76वें वर्ष के अंत की ओर बढ़ रहा है, यह पीछे मुड़कर देखने लायक है कि इतने कम समय में राष्ट्र कितना आगे आ गया है। स्वतंत्रता के समय भारत की जनसंख्या 34 करोड़ थी। आज हमारे देश की जनसंख्या 143 करोड़ के आस पास हो गई है। 1947 इसका साक्षरता स्तर भी खतरनाक रूप से लगभग 12 प्रतिशत से भी कम था। 12 पतिशत से बडकर 77.7 प्रतिशत हो गई है। आजादी प्राप्ति के समय हमारी प्रति व्यक्ति आय मात्र 249 रूपये वार्षिक थी जो आज वह एक लाख बहत्तर हजार हो गई है। उस वक्तत ओसतआयु केवल 32 साल हो थी जो आज लगभग 67.7 हो गई है। एक उल्लेखनीय उपलब्धि है यहे आंकड़े उनके मुहं पर करार तमाचा है जो कहते हैं कि पिछले 70 सालों में कुछ भी काम नहीं हुआ था। हमारे मुल्क में उस समय के अंदर सुई जैसी वस्तु नहीं बनती थी। आज हम उपग्रह बनाते हैं और उपग्रह चन्द्रमा की सतह पर उतरने की और अग्रसर है, ऐसा करने वाले हम तीसरे मुल्क होगें। देश में हजारों कालेज, सेक्दू विश्व विद्यालय आई आए टी आई ऍम जैसे संस्थान हाई। हजारों मेडिकल कॉलेज है। अनेकों इंडियन इंस्टिट्ययूट आफ मेडिकल साइंस संस्थान है। हमारे डाक्टर, ईंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् विदेशों में भारत का मान बड़ा रहें हैं। प्रथम प्रधान मंत्री ने भंक्दा बाँध बनवा कर उनको आधुनिक मंदिर कहा था। हमारे देश के अंदर हिन्दू–मुसलमान, सिख, ईसाई, फ़ारसी आदि विभिन्न धर्मों के लोग प्रेम से रहते हैं। हमारा मुल्क विभीन्नता मे एकता की जीती–जाती मिसाल है। हमारे राष्ट्र निर्माताओं धर्म को व्यक्तिगत आस्था माना है और हर धर्म के इन्सान का अपनी अपने श्रद्धा और आस्था के साथ जीने की सलाह दी थी, उन्होंने कभी भी धर्म और राजनीती को मिलाने की बात नहीं की थी, यही हमारे धर्म निरपेक्षता का मूल सिद्धांत है। अमेरिका में हमारे डॉक्टर श्रेष्ट माने जाते हैं। स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में भी हम आगे हैं। हमारे यहाँ अनेक देशों के मरीज इलाज कराने आते है।

राष्ट्र में बैंकों का राष्ट्रीकरण करके बैंकों के दरवाजे सामान्य लोगों के लिए खोल दिए। राजा–महाराजों के प्रीवर्ष समाप्त कर दिये हैं। सीक्किम को देश का अविभाज्य अंग बना दिया। पिछली शताब्दी मे एक नये मुल्क का निर्माण करने की हिम्मत इन्दिरा जी में ही थी। तिरानवे हजार पाकिस्तान के सेंकू बन्दे मनाने की शक्ति हम में ही थी, शिमला समझोते अनेक सालों तक कश्मीर में शान्ति बनी रही। सार्वाजनिक क्षेत्र मे अंकों उपक्रम बना कर हजारों को रोजगार फिया गया। हरित क्रांति सफेद क्रांति की वजह से हम खाद्यान्न मे आत्म निर्भर हो, दूसरी मुल्कों में उनका निर्यात कर रहें।

---

# स्मार्ट मीटर का सही ज्ञान अब राजस्थान को देगा नई पहचान

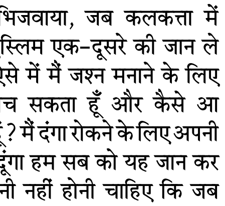

**दीपक चक्रवती**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य में बिजली वितरण व्यवस्था एक नए युग में प्रवेश कर चुकी है। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय एवं राजस्थान सरकार के संयुक्त वित्त पोषण से प्रदेश में बिजली उपभोक्ताओं को नि:शुल्क स्मार्ट मीटर लगवाए जा रहे हैं। प्रदेशभर में लगाए जा रहे स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को न केवल बिजली खपत पर नियंत्रण दे रहे हैं बल्कि पारदर्शिता, सटीकता और उपभोक्ता सशक्तिकरण का नया उदाहरण भी प्रस्तुत कर रहे हैं। जयपुर, जोधपुर एवं अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा प्रदेश के समस्त शहरी और ठामीण क्षेत्रों में (कृषि उपभोक्ताओं को छोड़कर) में स्मार्ट मीटरों का चरणबद्ध रूप से इंस्टॉलेशन किया जा रहा है।

**स्मार्ट मीटर क्यूँ है खास-** यह रियल टाइम में खपत की जानकारी देता है, साथ ही उपभोक्ता मोबाइल ऐप और एसएमएस के माध्यम से अपने खपत और शेष बैलेंस पर नजर रख सकता है। यह मीटर छेड़छाड़–रोधी, रिमोट कनेक्शन – डिस्कनेक्शन की सुविधायुक्त है और बिना किसी लाइनमैन के, उपभोक्ता स्वयं बिजली कनेक्शन नियंत्रित कर सकता है। इस प्रकार बिजली खपत की पारदर्शिता, बिलिंग में मानवीय हस्तक्षेप की समाप्ति, बेहतर नियंत्रण, पावर कट और विद्युत व्यवधान की सामयिक सूचना की सुविधा देता है। एक ही मीटर प्रीपेड, पोस्टपेड एवं नेट मीटर पर कार्य कर सकेगा। उपभोक्ता को खपत का विस्तृत विवरण मिलता है, सोलर लगाने पर इसी स्मार्ट मीटर को नेट मीटर से बदला जा सकता है।

**प्रदेशभर में 4 लाख 68 हजार से अधिक उपभोक्ताओं ने अपनाये स्मार्ट मीटर-** यह पहल केंद्र सरकार की रिवैम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम के तहत क्रियान्वित की जा रही है, जिसका उद्देश्य बिजली वितरण में सुधार, लाइन–लॉस में कमी और शत–प्रतिशत सही मीटरिंग, बिलिंग सुनिश्चित करना है। इस योजना के तहत संपूर्ण प्रदेश में स्थापित मीटर को स्मार्ट मीटर से बदला जा रहा है जिसके अंतर्गत प्रदेश में कुल 4 लाख 68 हजार से अधिक स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं।

**बिजली निगम पर और अधिक बढ़ा है उपभोक्ताओं का भरोसा-** इस योजना से जुड़ने के बाद उपभोक्ताओं ने बताया कि अब उन्हें बिल जमा करने के लिए समय सीमा की चिंता नहीं रहती और न ही गलत बिलिंग की परेशानी होती है। उनका बिजली निगम पर भरोसा और अधिक बढ़ा है। यह स्मार्ट परिवर्तन न केवल एक तकनीकी सुधार है बल्कि ऊर्जा क्षेत्र में एक जनभागीदारी आधारित क्रांति है। इससे उपभोक्ता स्वयं ऊर्जा का प्रबंधन कर रहे हैं। प्रदेश में कुल 1 करोड 42 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर लगाए जाने का लक्ष्य रखा गया है।

**- दीपक चक्रवर्ती,**
**सहायक जनसम्पर्क अधिकारी**
**करौली**

---

## राशिफल

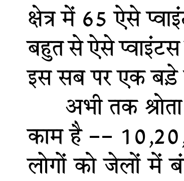

**पंडित अनिल शर्मा**

### गुरूवार 14 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र प्रात: 9:06 तक, शूल योग दिन 1:12 तक, गर करण दिन 3:16 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 9:06 से मेष राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य–कर्क, चन्द्रमा–मीन, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–मिथुन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। रवियोग दिन 9:06 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 2:08 से आरम्भ होगी। आज हल षष्ठि और ललड़ी छठ है। आज चान्द छठ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 10:16 पर होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** शुभ सूर्योदय से 7:39 तक, चर 10:54 से 12:31 तक, लाभ–अमृत 12:31 से 3:46 तक, शुभ 5:24 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:01, सूर्यास्त 7:01

#### मेष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

#### वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

#### मिथुन

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

#### कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख–सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

#### सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

#### कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

#### तुला

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

#### वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

#### धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।

#### मकर

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।

#### कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

#### मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।